

अवधानि पुनानाः 6,66,4. AV. 4,24,4. 6,19,1. त्वं पुनीहि इतिान्यस्म-
त् 19,33,3. समिद्धा अग्निः सुपुना पुनाति 12,2,11. आपस्त्वा पुनन्तु शुच्युः
शुचिम् 10,6,3. 6,19,1. 62,1. अपालो त्रिष्वली RV. 8,80,7. VS. 7,1,21.
8,57. अग््न आर्यं पवते VS. 19,38. पुनानि तन्वा मिथः स्वेन् दत्तेण राजयः
klar werden RV. 4,36,6. वर्षा पुनानाः klar erscheinen lassen 2,3,5. Pān.
GRUB. 2,2. यो यज्ञाय पुनानि TS. 6,1,2,1. अन्नो हिरेण्यं पुनानि auswaschen
3,1. द्वादशावराद्वादश परान्पुनानि ĀCV. GRUB. 1,6. MBH. 3,12730. M. 1,
105. 11,248. JĀGŪ. 1,58. MBH. 3,6030. R. Einl. RAGH. 17,2. BHĀG. P. 4,
1,15. 3,16,21. आसप्तमं कुलं चैव पुनानि MBH. 3,7081. पुनान RAGH. 1,53.
पुण्याश्रमदर्शनेन तावदात्मानं पुनीमहे ÇĀK. 7,20. अवश्यपाव्यं पवसे BHATT.
6,64. पवनः पवतामस्मि BHĀG. 10,31. पवित्वा BHATT. 3,18. पूवा (= स्नात्वा
Scholl.) sich abgewaschen habend 9,39. pass.: (अग्निः) कृद्गभिः पूयते वि-
प्रः कण्ठगामिस्तु भूमिपः M. 2,62. 8,83. 257. निग्रहेण हि पापानो साधू-
तो संग्रहेण च । द्विजातय इवेत्याभिः पूयते सततं नृपाः ॥ 311. 11,230. 253.
MBH. 13,3440. 14,45. BHĀG. P. 6,1,16. पूयते दुष्कृतात् MBH. 3,10530. BHĀG.
P. 7,10,16. पूयते (= धूयते) सर्वपापानि MBH. 1,247. BHĀG. P. 6,2,17.
partic. पूत = पवित्र, मेध्य. विविक्त AK. 2,7,44. 3,2,5. 3,4,44. 85. TRIK.
3,3. 165. H. 1435. MED. I. 36. = वङ्गलीकृत AK. 2,9,23. TRIK. MED. =
निर्वृमीकृत H. 1183. = शटित (?) MED. घृत RV. 3,2,1. आस्य AV. 6,113,
3. सोम RV. 1,3,4. 8,83,5. स्वयिति blank 7,3,9. धान्य von der Spreu
gereinigt P. 8,2,44. VArtI. 3. Sch. शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः 10,18,2.
AV. 6,122,5. TS. 5,2,4,4. ÇAT. Br. 14, 8, 45, 12. KHĀND. UP. 5,10,10.
M. 2,75. MBH. 2,347. 3,6030. BHĀG. 4,10. R. 1,48,32. RAGH. 2,13. BHĀG.
P. 7,10,16. 17. दृष्टिपूर्तं न्यसेत्पादं वस्त्रपूर्तं जलं पिबेत् । सत्यपूर्तो वेदेद्वचं
मनःपूर्तं समाचरेत् ॥ Spr. 1232. 2183. R. 1,40,12. RAGH. 2,15. RĀGĀ-TAR.
5,163. BHATT. 6,49. पूतपाप = धूतपाप BHĀG. 9,20. Vgl. अयूत. अगस्तिः,
धाराः, पवित्रः, ब्रह्मः, सु. — 2) bildlich von der läuternden und schei-
denden Thätigkeit des Geistes: sichten, unterscheiden; ersinnen, dach-
ten; med. auch sich klar darstellen: अन्नकृदा मनसा पूयमानाः RV. 4,
58,6. AV. 4,39,10. पुनानो अर्कम् RV. 7,9,2. पुनीपे वामरत्नसं मनीषाम्
83,1,3,8,5. त्रिभिः पवित्रैरुपुष्याद्यर्कम् 26,8. तमभि कर्त्वा पुनीती धीति-
र्याः 4,3,7. पूता वाचः 4,79,10. मतिर्नद्यसि शुचिः सोम इव पवते चारु-
रग्ये 6,8,1. घृतं न शुचिं मतयः पवते 10,2. — 3) klären, erhellen (die
Erkenntnis u. s. w.) RV. 8,12,11. इन्द्रः सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीत उक्थ्य-
म् 13,1. क्रतुं पुनानः क्विभिः पवित्रैः 3,1,5. VĀLUK. 5,6. कर्त्तम् VS. 9,1.
— 4) reinigend gehen, — wehen (vom Winde); mit acc. reinigend durch-
wehen: पवमानः पवते der Wind weht AIR. Br. 1,7. मय्यं वातः पवतो
कार्मे अस्मिन् RV. 10,128,2. कस्माद्ङ्गात्पवते मातरिश्वाः AV. 10,7,2.
वाताः 13,3,2. सर्वा दिशः पवते मातरिश्वाः 19,19,54,2. 8,1,5. VS. 36,10.
ÇAT. Br. 1,7,1,3. 3,1,3,19. KHĀND. UP. 4,16,1. BHATT. 20,29. = गति-
कर्मन् NAIGH. 2,14 (vgl. DAṬUP. 14,40, v. l.). Vgl. पवमान. — 5) so v. a.
अभिगच्छति nach Śi. in der Stelle: एभिर्न इन्द्राकृभिर्दशस्य दुर्मित्रासो
हि क्षितयः पवते RV. 7,28,4. vielleicht im Anschluss an Bed. 3. so v. a.
Pläne —, Anschläge machen.

— caus. पर्वयति und पार्वयति retnigen: यज्ञमानमेवैतया पवयति TS.
2,5,6,6. यदर्भपुञ्जीलैः पवयति 6,1,1,7. बहिः पवयित्वात्तः प्रपादयति 2,
1. ÇAT. Br. 12,4,4,6. 7. TB. 1,7,4,4. पवित = पूत P. 1,2,22. 7,2,51.
Vop. 26,103. fg. पवितो ऽनुगोषवतिः शीतेः BHATT. 9,39. पावयति AIR. Br.

IV. Theil.

1,3. ÇAT. Br. 3,1,2,18. 12,8,1,9. KĀTJ. Ç. 7,3,1. 19,2,27. JĀGŪ. 1,60.
3,35. MBH. 5,414. 14,51. R. GOR. 1,36,9. 37,23. Spr. 1697. ÇĀK. 83.
MĀRK. P. 56,17. पावयो क्रियात् ved. P. 3,1,42. = पाव्यात् Schol. अपी-
पवत् P. 7,4,80. Schol. पावयस्व MBH. 7,2116. पाव्यते pass. M. 3,183.
पावित 2,75. MBH. 4,192. 7,2757. 13,3957. HARIV. 8637. R. 1,63,31.
KUMĀRAS. 3,37.

— desid. पुपूषति P. 7,2,74. Sch. पिपविषते P. 7,2,74. 7,4,80. Sch.
Vop. 19,7. desid. vom caus. पिपावपिषति P. 7,4,80. Sch. Vop. 19,14.

— अति läutern über, — durch: सोममाति वारमपाविषुः RV. 9,60,2.
3. med. reinigend durchrinnen, durchpurgiren; bes. gebraucht von der
Wirkung des getrunkenen Soma, der auf dem natürlichen Wege (und
als laxans) durchgeht: किं इव वा एष यं सोमो ऽतिपवते PĀNĀV. Br.
18,3,4. TB. 1,8,6,6. ÇAT. Br. 5,3,5,3. KĀTH. 12,10. स सकृत्तमे संव-
त्सरे सर्वो ऽत्यपवत ÇAT. Br. 10,4,4,3. अतिपूत und अतिपवित so v. a.
शीर्षामो und Gegens. zu सोमवामिन् TB. 1,8,5,5. 6,4. PĀNĀV. Br.
18,3,3. KĀTH. 12,9. ÇAT. Br. 5,3,4,13. य इष्टा प्रापियान्स्यात्स सोमाति-
पवित इति शापिउल्लयः । यः सोमं पीत्वा हर्षयेत् विरिच्येत वेति धान्यज्यः
LĀTJ. 8,10,7. fg. KĀTJ. Ç. 15,10,21. 19,1,2. 2,9. विष्टा श्रुतमतिपव-
ते यो राजापहृद्यते purgando ejicit PĀNĀV. Br. 18,3,6. fg.

— अनु med. reinigend entlang strömen, — wehen ÇAT. Br. 1,7,1,12.
3,8,2,1. 14,1,2,23.

— अग्नि 1) sich läutern —, gereinigt ausfließen in der Richtung auf
zum Zweck von, für Etwas: अग्नि सोमास आगवः पवते मय्यं मदम् RV. 9,
23,4. अग्नि प्रियाणि पवते नामानि 75,1. अग्नि देववीतिमिन्द्राय सोम पव-
स्व 89,7. घृतस्य धारा अग्नि तत्पवत 4,38,9. — 2) zuwehen auf: पदभिय-
वते (वायुः) TB. 2,3,9,1. दिवम् 4. TS. 5,4,9,4. — 3) verklären: स ए-
नं तूतो भूयामिपवते TS. 3,2,3,3. AV. 12,1,12.

— अग्नि 1) med. geläutert fließen zu (acc.), in (loc.) RV. 9,8,7. पुनान
इन्द्रुरिन्द्रमा 66,28. इन्द्रस्येन्द्रा ब्रह्ममा पवस्व 70,10. 80,3. 84,3. 90,4.
— 2) Etwas herströmen zu: ते नः सकृन्निर्णी रयिं पवतामा सुवीर्यम् RV.
9,13,5. 49,1. VS. 8,63. auch act.: अस्मभ्यं वृष्टिमा पव RV. 9,49,3.

— समा reinigen: अग्निः पवित्रं (nom.) समापुनातु SIDDH. K. zu P. 3,2,186.

— उद्द ausreinigen, läutern AV. 12,1,30. सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्य-
च्छिद्रेण पवित्रेण VS. 1,12. TB. 1,7,6,1. 3,2,3,10. यद्भार्य उत्पुनाति
5,1. ÇAT. Br. 1,1,2,3. आस्यम् 3,4,22. 3,4,1,18. KĀTJ. Ç. 4,10,5. स-
परिपुनत्पूर्तं नवनीतं वोत्पूतम् ĀCV. Ç. 2,6. AIR. Br. 2,23. KAUC. 2.
तत् उत्पुनीत नः rein herausziehen TB. 3,7,12,6. — Vgl. उत्पवन fg.,
उत्पाव.

— नि, partic. निपूत durchgeseht, geläutert auf: वने निपूतं वन उन्न-
यधम् RV. 2,14,9. अयं तं इन्द्र सोमो निपूतो अग्निं बर्हिर्दयि 8,17,11.

— निस् reinigend abschütteln (die Spreu), reinigen überh. ÇAT. Br. 1,
1,4,21. KĀTJ. Ç. 2,4,18. KAUC. 61. यवान्निष्पूतान् (so ist zu lesen) Suçā.
2,72,9. प्रायश्चित्तानि चीर्णानि नारायणपराश्रुवम् । न निष्पुनति राजेन्द्र
सुराकुम्भमिवापगाः ॥ BHĀG. P. 6,1,18. — Vgl. निष्पवण, निष्पाव.

— प्रतिनिस् daneben abschütteln (?) KAUC. 14.

— परा reinigend beseitigen AV. 11,1,11. VS. 1,16.

— परि durchsehen, läutern: सोमः परिपूतो अग्निभिः RV. 1,135,2.

अव्यो वारैः 8,2,2. 9,98,7. अव्ये वधूयुः पवते परि लचि rein abreiben

52*

